सामान्य सूचना

- स्मारक संग्रहालय प्रवेश शुल्क 2/– प्रति व्यस्क
- 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों हेतु प्रवेश निःशुल्क है।
- संग्रहालय प्रतिदिन खुला रहता है।
- संग्रहालय समय – 8 बजे पूर्वाह्न से 5 बजे अपराह्न तक।

सहायक अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
पुरातात्विक संग्रहालय, कालीबंगा
जिला हनुमानगढ़ (राज.), फोन 01508-233116

अन्तर्राष्ट्रीय सग्रंहालय दिवस 18 मई

पुरातात्विक संग्रहालय, कालीबंगा

संग्रहालय

★ सांस्कृतिक धरोहर के कोष ★
★ परम्पराओं का दर्पण ★
★ अतीत के पोषक ★
★ भविष्य के मार्गदर्शक ★
★ ज्ञान के अभिनव स्थल ★

2010

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
"कैलाश" मानसरोवर 70/133-140, पटेल मार्ग
जयपुर मण्डल, जयपुर
फोन : 0141-2396523, 2784533, 2784534

पुरातात्विक संग्रहालय, कालीबंगा

कालीबंगा संग्रहालय जिला हनुमानगढ के तहसील पीलीबंगा से 8 किलोमीटर उत्तर में पीलीबंगा – रावतसर रोड पर स्थित है । इस पुरातात्विक संग्रहालय की स्थापना 1986 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा की गई । यहाँ प्रदर्शित पुरातात्विक अवशेष हड़प्पाकालीन हैं । सिन्धु घाटी की सभ्यता, विश्व की चार प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है । यह सभ्यता तीसरी सहस्राब्दी ई0पू0 2500–2000 में सिन्धु, सरस्वती एवं उनकी सहायक नदियो की घाटी में विकसित एवं समृद्ध हुई थी । अपनी कुछ प्रमुख विशेषताओं के कारण यह सभ्यता अन्य समकालीन सभ्यताओं से भिन्न है । सुनियोजित नगर प्रबन्धन, सुदृढ़ सुरक्षा–प्राचीर ,विकसित जल निकास व्यवस्था,दीर्घकालीन जल–संग्रहण एंव संवर्धन की व्यवस्था, लिपि, मुद्रा, बाट व माप एंव विशेष प्रकार के मिट्टी के पात्र हड़प्पा सभ्यता को अन्य संस्कृतियों से अलग पहचान देते हैं सन् 1947 में देश विभाजन के समय अधिकांश हड़प्पाकालीन पुरास्थल पाकिस्तानी भू–भाग में चले गये थे जिससे भारत इस महान सभ्यता की समृद्ध धरोहर से वंचित हो गया था । ऐसे समय में भारतीय पुराविदों ने अपने अथक प्रयासों से इस कमी को पूरा ही नहीं किया अपितु अनेक अज्ञात पक्षों को उजागर कर इस सभ्यता की खोज में नये आयाम जोड़ कर अधिक समृद्ध करने में सहयोग दिया ।

प्राचीन कालीबंगा घग्घर (प्राचीन सरस्वती) नदी के बाएँ तट पर स्थित कालीबंगा का प्राचीन स्थल तीन टीलों में विभक्त है,यथा सबसे बड़ा मध्य में,छोटा पश्चिम में तथा सबसे छोटा पूर्व में है । भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पूर्व महानिदेशकों, प्रोफेसर बी.बी.लाल, स्व.बी.के.थापर एवं स्व.जे. पी.जोशी के निर्देशन में नौ सत्रों (1961–1969) में हुए

उत्खनन के दौरान यहाँ जाल प्रतिरूप (Grid Pattern) पर बसे हड़प्पा कालीन नगर के अवशेष प्रकाश में आए । यहाँ दो सॉस्कृतिक कालों के प्रमाण मिले है जो प्रारम्भिक हड़प्पाकाल लगभग (3000–2700 ई.पू.) तथा विकसित हड़प्पाकाल लगभग (2600–1900 ई.पू.) हैं ।

प्रारम्भिक हड़प्पाकालीन बस्ती एक समचतुर्भुजाकार परकोटे से घिरी हुई थी जिसका माप उत्तर–दक्षिण में 250 मी. तथा पूर्व–पश्चिम में 180 मी. था । परकोटा एवं उसके अन्दर स्थित आवास–गृह 30x20x10 से.मी. आकार की कच्ची ईंटों से बनाये गये थे । इस काल की सर्वोत्तम उपलब्धि बस्ती के दक्षिण–पूर्व भाग से प्राप्त हल से जुते हुए खेत के अवशेष है जो सम्भवतः विश्व में इस प्रकार का प्राचीनतम उदाहरण है । इस काल की विशिष्ट पहचान इसकी मृदभाण्ड कला है जो संरचना के आधार पर छः श्रेणियों में विभाजित की गई है जो परवर्ती हड़प्पाकालीन कला से कुछ भिन्न है । अन्य प्राप्त अवशेषों में चकमक पत्थर के फलक (Chert Blades), तामड़ा पत्थर (Carnelian),सिलखड़ी (Steatite), काचली मिट्टी (Faience), तॉबा, स्वर्ण, शंख (Shell) तथा पक्की हुई मिट्टी (Terracotta) के मनके,तॉबा,शंख एवं पकी मिट्टी की चूड़ियॉ,मिट्टी के बने खिलौने तथा हड्डी के नुकीले औजार सम्मिलित हैं ।

प्रारम्भिक कालीन बस्ती सम्भवतः 2700 ई.पू. में आये भूकम्प से नष्ट हो गई । यह स्थल लगभग 100 वर्ष पश्चात् पुनः आबाद हुआ,लेकिन अब इसकी बसावट भिन्न थी । इस काल में बस्ती दो स्पष्ट भागों में बंटी हुई थी– पश्चिम में बना दुर्ग (Citadel) तथा पूर्व में बसा निचला नगर (Lower Town) ।

दुर्ग क्षेत्र पूर्ववर्ती काल के अवशेषों पर बसा था जो 240 मी X 120 मी. समचतुर्भुजाकार परकोटे से सुरक्षित था तथा दो भागों में विभक्त था । परकोटा पूर्णरूप से 40 X 20 X 10 से.मी. आकार की कच्ची ईटों से निर्मित था । दुर्ग के दक्षिणी आधे हिस्से में पॉच–छः बड़े चबूतरे मिले हैं । उनमें से कुछ धार्मिक अनुष्ठान हेतु प्रयुक्त हुए प्रतीत होते हैं । एक चबूतरे पर पंक्तिबद्व सात 'अग्नि वेदिकाएँ', एक स्नान करने हेतु ईंटों का फर्श एवं कुआँ मिला । दुर्ग के उत्तरी भाग में अभिजात्य/ पुजारी वर्ग के लोगों के आवास–गृह थें ।

निचला नगर भी कच्ची ईंटों के प्राचीर से सुरक्षित था । इसकी माप उत्तर–दक्षिण में 360 मी. तथा पूर्व–पश्चिम में 240 मी. थी । परकोटे के अन्दर गलियॉ उत्तर–दक्षिण एवं पूर्व–पश्चिम दिशा में जाल प्रतिरूप (Gridiron) के रूप में अवस्थित थी जो इस क्षेत्र को खण्डों (Blocks) में विभाजित करती थी । घर कच्ची ईंटों के बने थे तथा प्रत्येक घर में एक आंगन होता था जिसके दो या तीन तरफ आवासीय कक्ष होते थे । पकी हुई ईंटों का प्रयोग विशेषतः नालियों, कुओं, दहलीज तथा स्नानागार चबूतरों तक सीमित था । इस काल के पुरावशेषों में चकमक पत्थर के फलक एवं कोर (Cores), सुलेमानी पत्थर (Agate) ,तामड़ा पत्थर, लाजवर्द (Lapis Lazuli) कॉचली मिट्टी, यशव (Jasper) सिलखड़ी तथा तॉबा के मनके, पकी हुई मिट्टी एवं शंख की चुड़ियॉ, मृण्मूर्तियां, तॉबा/ कांसा के औजार, पत्थर के बाट–बट्टे, हडप्पा लिपियुक्त मुद्राएं एवं मुद्रा छापें तथा पकी मिट्टी के

गोले एवं तिकोने आदि हैं ।

तीसरा टीला निचले नगर से 80 मी.पूर्व में स्थित है जहॉ चार–पॉच'अग्नि वेदिकाएँ' एक संरचना से घिरी थी जो सम्भवतः धार्मिक अनुष्ठानों हेतु प्रयोग में लाई जाती थीं ।

इस काल की प्रमुख विशेषता यहॉ शवाधान क्षेत्र का होना है जो दुर्ग के पश्चिम–दक्षिण पश्चिम मे स्थित था । यहाँ के उत्खनन से तीन प्रकार की शवाधान पद्धतियाँ प्रकाश में आई। आयताकार अथवा अण्डाकार गर्तों में सशरीर शवाधान,जिसमें शव को सीधा लिटाया जाता था। वृताकार गर्तों में घट शवाधान तथा मृदभाण्ड एवं अन्य अन्त्येष्टि वस्तुओं सहित आयताकार अथवा अण्डाकार गर्त । अन्तिम दो प्रकार की कब्रों में शव नहीं पाये गये ।

संग्रहालय भवन में प्रारम्भ मे केवल एक दीर्घा थी जिसमें सतह से प्राप्त अवशेषों जैसे हडप्पा लिपियुक्त मुद्राएँ एवं मुद्रा छापें,तॉबे के औजार, चकमक पत्थर के फलक, सिलखड़ी, तामड़ा पत्थर, स्वर्ण एवं अर्द्धमूल्यवान पत्थरों के मनके, पत्थर के बाट– बट्टे, पशु–पक्षियों की मृण्मूर्तियॉ एवं खिलौने तथा अनाज आदि रखने के बड़े मटके प्रदर्शित किये गये ।

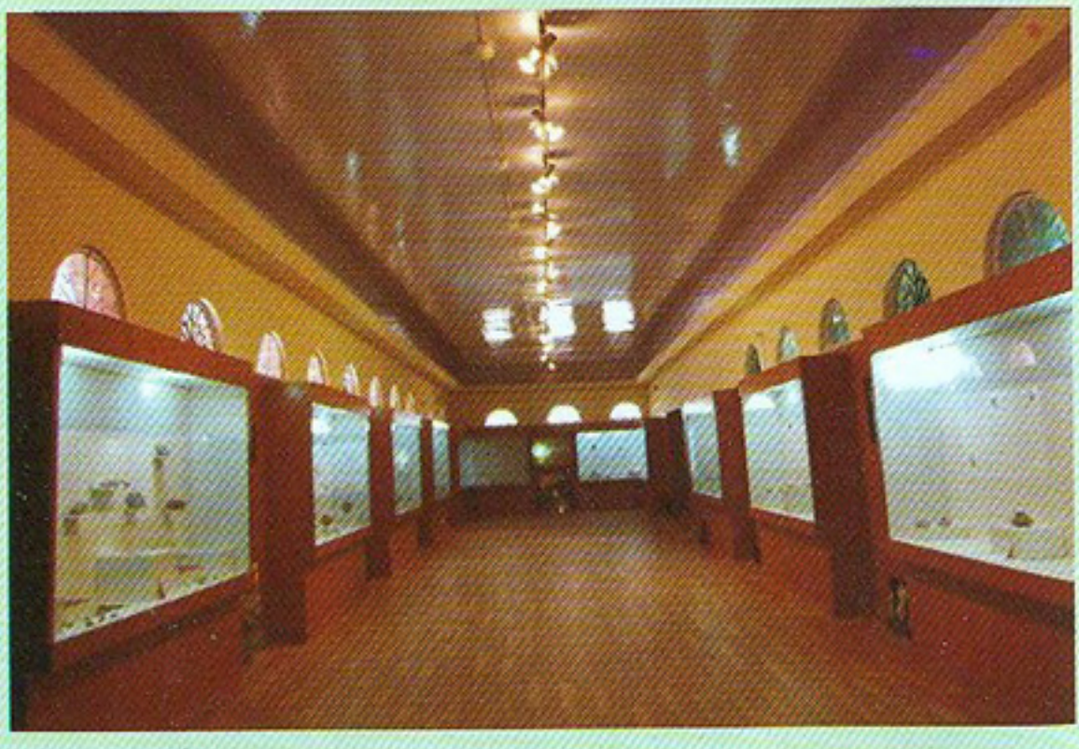

कालान्तर में पर्यटकों की रूचि को देखते हुए तीन और दीर्घाओं का निर्माण किया गया जिसमें एक दीर्घा में प्राक् हडप्पा कालीन मृदभाण्ड तथा दूसरी दीर्घा में राजस्थान के संरक्षित स्मारकों के छाया–चित्र प्रदर्शित है। तीसरी दीर्घा में उत्खनन से प्राप्त सामग्रियों को प्रदर्शित करने हेतु शोकेशों का निर्माण चल रहा है ।